ISSN 2349-6444

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुशंसित मूल्यांकनपरक पत्रिका

अरुण प्रभा संयुक्तांक (सात-आठ) जनवरी-दिसम्बर-[illegible]

अरुण प्रभा

सम्पादक :
प्रो. ओकेन लेगो

हिन्दी विभाग
राजीव गाँधी विश्वविद्यालय
रोनो हिल्स, दोइमुख, ईटानगर
अरुणाचल प्रदेश–791112

Scanned with CamScanner

जनवरी-दिसम्बर, 2016

अरुण प्रभा

मूल्यांकनपरक पत्रिका (Reffered Journal)

हिन्दी शोध एवं आलोचना की अर्द्धवार्षिकी

संरक्षक

प्रो. नानो मिबाङ

कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. हरीशकुमार शर्मा

भाषा संकायाध्यक्ष

सम्पादक

प्रो. ओकेन लेगो

मूल्यांकन विशेषज्ञ

प्रो. एम. वेंकटेश्वर (सेवानिवृत्त) इफ्लू, हैदराबाद

प्रो. कृष्ण मुरारि मिश्र (सेवानिवृत्त) इलाहाबाद विश्वविद्यालय

प्रो. नन्दकिशोर पाण्डेय, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

प्रो. अनन्त कुमार नाथ, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर

सम्पादक मंडल

डॉ. श्याम शंकर सिंह

डॉ. जमुना बीनी तादर

डॉ. अभिषेक कुमार यादव

डॉ. जोरम यालम नाबाम

डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र

डॉ. सत्य प्रकाश पाँव

श्री राजीव रंजन प्रसाद

Scanned with CamScanner

अरुण प्रभा

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुशंसित

मूल्यांकनपरक पत्रिका (Reffered Journal)

जनवरी- दिसम्बर, २०१६

प्रकाशक :

कुलसचिव, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर

सम्पादकीय पता :

हिन्दी विभाग,

राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, रोनाके हिल्स, दोइमुख - ७९१११२

दूरभाष - ०३६० - २२७७२६७, मो.- ०९४०२२७५६१५

E-mail: okeargu05@gmail.com

(c) सर्वाधिकार सुरक्षित

अरुण प्रभा में प्रकाशित रचनाओं के साथ राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, ईटानगर या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

मूल्य : एक प्रति पचास रुपये

वार्षिक सदस्यता राशि : १५०/-

द्विवार्षिक सदस्यता राशि : ३००/-

मुद्रक :

मास्टरमाइंड

एन. टि. रोड, लखिमपुर, असम।

पिन- ७८७००१

E-mail : masterminsnlp2015@gmail.com

Arun Prabha An half yearly journal in Hindi

Publised by Register, Rajiv Gandhi University, Rono Hills, Itanagar- 791112

Scanned with CamScanner

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुशंसित
मूल्यांकनपरक पत्रिका (Reffered Journal)

अनुक्रम

❑ रवीन्द्रनाथ ठाकुर के उपन्यासों में स्त्री जीवन की त्रासदी और विडम्बना
//डॉ. एम. वेंकटेश्वर - 6

❑ असमिया संस्कृति पर श्रीमन्त शंकरदेव का प्रभाव
//प्रो. हरीशकुमार शर्मा - 12

❑ मध्यकालीन काव्य का शास्त्रीय स्वरूप
//प्रो. सुशील कुमार शर्मा- 16

❑ कबीर की दीपकधर्मी काव्य-संवेदना
//डॉ. मधु सुदन शर्मा- 21

❑ साम्प्रदायिक सौहार्द के कवि दादू दयाल
//प्रो. ओकेन लेगो- 29

❑ नाट्यतत्वों की कलात्मक अन्विति
//डॉ. अनुशब्द-35

❑ आदिवासी विमर्श: वैचारिकी का प्रश्न
//डॉ. अभिषेक कुमार यादव-38

❑ स्त्री-विमर्श के आलोक में अन्या से अनन्या आत्मकथा का मूल्यांकन
//डॉ. जमुना बीनी तादर- 42

❑ अयोध्या प्रसाद खत्री और हिन्दी आलोचना
//राजीव रंजन गिरि- 47

❑ भाषा विज्ञान का समाज भाषिक स्वरूप
//डॉ. जोराम यालाम नाबाम-55

❑ अरुणाचल प्रदेश के 'नोक्टे' जनजाति में नारी चेतना
//डॉ. दोन्ना तोलुक-59

❑ वर्तमान परिदृश्य और 'मनःविकार' के सन्दर्भ में श्री राम चरितमानस की चिन्तन दृष्टि
//डॉ. विश्वजीत कुमार मिश्र-63

❑ भूमण्डलीकृत समय-समाजपूर्व के कन्नड़-हिन्दी नाटकों में अभिव्यक्त राजनीतिक संवेदना
//डॉ. मीना कुमारी-70

❑ हिंदी भाषा : प्रयोजनमूलक सन्दर्भ एवं विमर्श
//राजीव रंजन प्रसाद- 81

❑ भक्ति आन्दोलन एवं शिवकुमार मिश्र के विचार
//डॉ. सत्य प्रकाश पाल- 89

❑ भक्तिकाव्य के कालजयी कवि और हमारा समय
//डॉ अभिषेक कुमार मिश्र- 93

❑ 'सारा आकाश' और स्त्री-विमर्श
//डॉ रितेश कुमार मिश्र- 106

❑ देखिए, जब जिंदगी की तर्जुमानी है ग़ज़ल
//लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता- 111

❑ डॉ. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य के 'मृत्युंजय' का सामाजिक मूल्यांकन
//मनोज कुमार कलिता- 121

❑ कुँवरनारायण की कविताओं में सामान्यजन का इतिहास और तद्युगीन सांस्कृतिक सौन्दर्य
//अमरनाथ प्रजापति- 126

❑ नागार्जुन: मैं तुम्हारा कवि हूं
//आशा सिंह- 131

❑ आदी लोक गीतों आदी समाज-संस्कृति का चित्रण
//आईनाम ईरिंग- 138

❑ अन्तहीन पीड़ा की 'धार'
//अंजला यादव-147

नाट्य-तत्वों की कलात्मक अन्विति

● डॉ. अनुशब्द

संस्कृत व्याकरण ने 'तत्व' शब्द की व्युत्पत्ति दी है: 'तनोति सर्वं इति तद तस्य भावः तत्वम्'। गरज कि जिसकी व्याप्ति सर्वत्र रहे, उसे तत्व कहते हैं। परंतु यह व्युत्पत्यर्थ नाट्य तत्व को परिभाषित करने में पूर्णतः समर्थ नहीं है। साहित्य-सृष्टि के संदर्भ में नाट्यतत्व एक पारिभाषिक पद है। यह नाट्यविधान के उन विशिष्ट अवयवों का ज्ञापक है जिनके विनियोग से नाट्य-प्रभाव की सृष्टि होती है। प्रसिद्ध नाटककार एवं नाट्यालोचक डॉ. सिद्धनाथ कुमार लिखते हैं कि 'तत्व तो केवल उन मूल पदार्थों को कहते हैं जिनसे किसी वस्तु का निर्माण होता है।' यह परिभाषा वस्तु के संदर्भ में जितनी सार्थक है उतनी विधा के संबंध में नहीं। कारण कि नाटक के सर्वस्वीकृत तत्व नाटक के कच्चा माल नहीं होते। रामगोपाल सिंह चौहान की दृष्टि में 'किसी भी रचना के मूल तत्व होने का गौरव वही तत्व प्राप्त कर सकते हैं जिनकी अवहेलना रचनाकार किसी भी दशा में न कर सके और अन्य रचना विधानों से उसके पार्थक्य को स्पष्ट कर सके।' प्रस्तुत संदर्भ में, नाट्यकृति और नाट्य-प्रस्तुति की प्रक्रिया में जिन सक्रिय अंगों और उपांगों का सहयोग प्राप्त होता है, वे सभी नाट्य-तत्वों की सीमा में आते हैं। दूसरे शब्दों में, नाट्य-तत्व उन समस्त साधनों को कहते हैं जिनके सहयोग से नाट्य-प्रस्तुति में सहृदय को रसोद्रेक होता है। तात्पर्य यह कि नाट्य-तत्व रस-निष्पत्ति का कारण है। इसी वजह से डॉ. मांधाता ओझा लिखते हैं- 'भारतीय नाट्य-चिंतन के अनुसार नाट्य-तत्व रस-निष्पत्ति का हेतु है जिसकी विवृत्ति अवस्थानुकृति या अभिनय द्वारा की जाती है।' बहरहाल, प्रभाव-सृष्टि और नाट्यानुभव में सहायक एवं समर्थ अंगोपांगों को नाट्य-तत्व कहते हैं।

भारतीय नाट्यदर्शन में नाटक के अंगोपांगों का सूक्ष्म विवेचन-विश्लेषण साकल्य में हुआ है, लेकिन कहीं भी नाट्य-तत्वों की स्थिति सुनिश्चित एवं सुनिर्धारित नहीं है। आद्याचार्य भरत ने नाट्योद्भव के प्रसंग में चार तत्वों का संकेत किया है। उनकी नजर में पाठ्य, गीत, अभिनय, और रस नाटक के मूलभूत तत्व हैं और इन सभी के उपजीव्य वेद हैं।' परवर्ती आचार्यों ने इस संदर्भ में इन तत्वों की अनुशंसा की है। आचार्य धनंजय ने 'दशरुपक' में नाटक के भेदक तत्वों की चर्चा की है, सामान्य तत्वों की नहीं। 'वस्तुनेतारसस्तेषां भेदको'। धनिक ने अपने भाष्य में स्पष्ट किया है कि 'वस्तु, नेता, रस के भेद से रुपक के भेद होते हैं।' महत्वपूर्ण नाट्यरूपों का स्थापत्य भी इस कारिका के मूल अभिप्राय को प्रमाणित करता है। वैसे रुपकों की संख्या दस हैं। किन्तु पूर्णांक रुपक मात्र तीन हैं: नाटक, प्रकरण और नाटिका। नाटक और प्रकरण में वस्तु-भेद है। नाटक की कथावस्तु प्रख्यात और प्रकरण की उत्पाद्य होती है। नाटिका में इन दोनों कथानकों का योग होता है। इन तीनों में नायक-भेद या नायकान्तर भी होता है। नाटक का नेता धीरोदात्त, प्रकरण का धीरप्रशांत और नाटिका का धीरललित। इनमें रस-भेद गौण होता है। शृंगार रस की योजना इन तीनों में स्वीकृत है। नाटक और प्रकरण में वीर रस की योजना भी वैकल्पिक रुप से संभव है। इन तथ्यों से सत्यापित होता है कि धनंजय द्वारा कथित नाटक के त्रितत्व नाटक के सामान्य तत्व नहीं हैं। ध्यातव्य है कि कुछ सुधी विद्वानों ने इन त्रितत्वों को ही नाटक का मूलभूत तत्व मान लिया है। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल नाट्य-तत्वों का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि 'नाटक के तीन मूलभूत तत्व हैं: वस्तु, नेता और रस।

CS Scanned with CamScanner